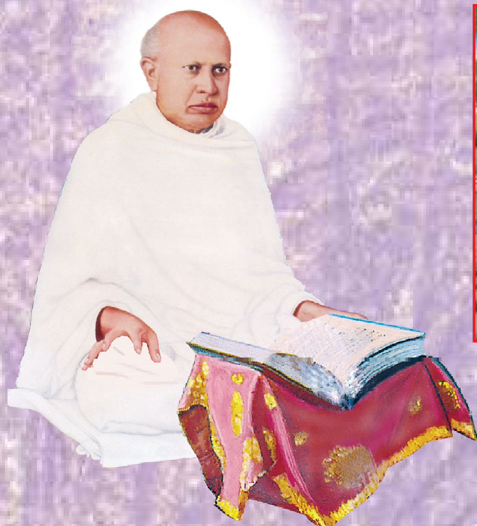

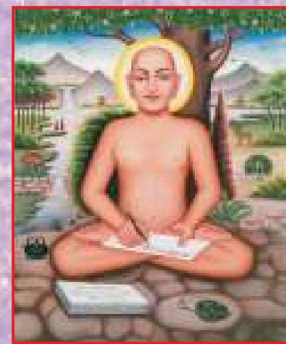

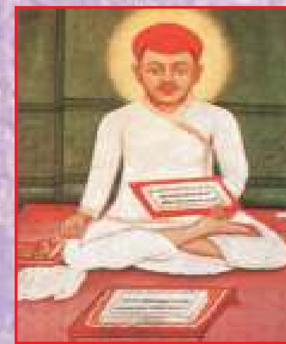

मङ्गल समर्पण 3

पण्डितजी का अहोभाव!

(1) पूज्य गुरुदेवश्री : संक्षिप्त जीवनवृत्त

(2) पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति उद्गार : अहो अहो श्री.....

(3) धन्य-धन्य है ज्ञानीजन....

हे परम पूज्य कृपालु गुरुदेव !

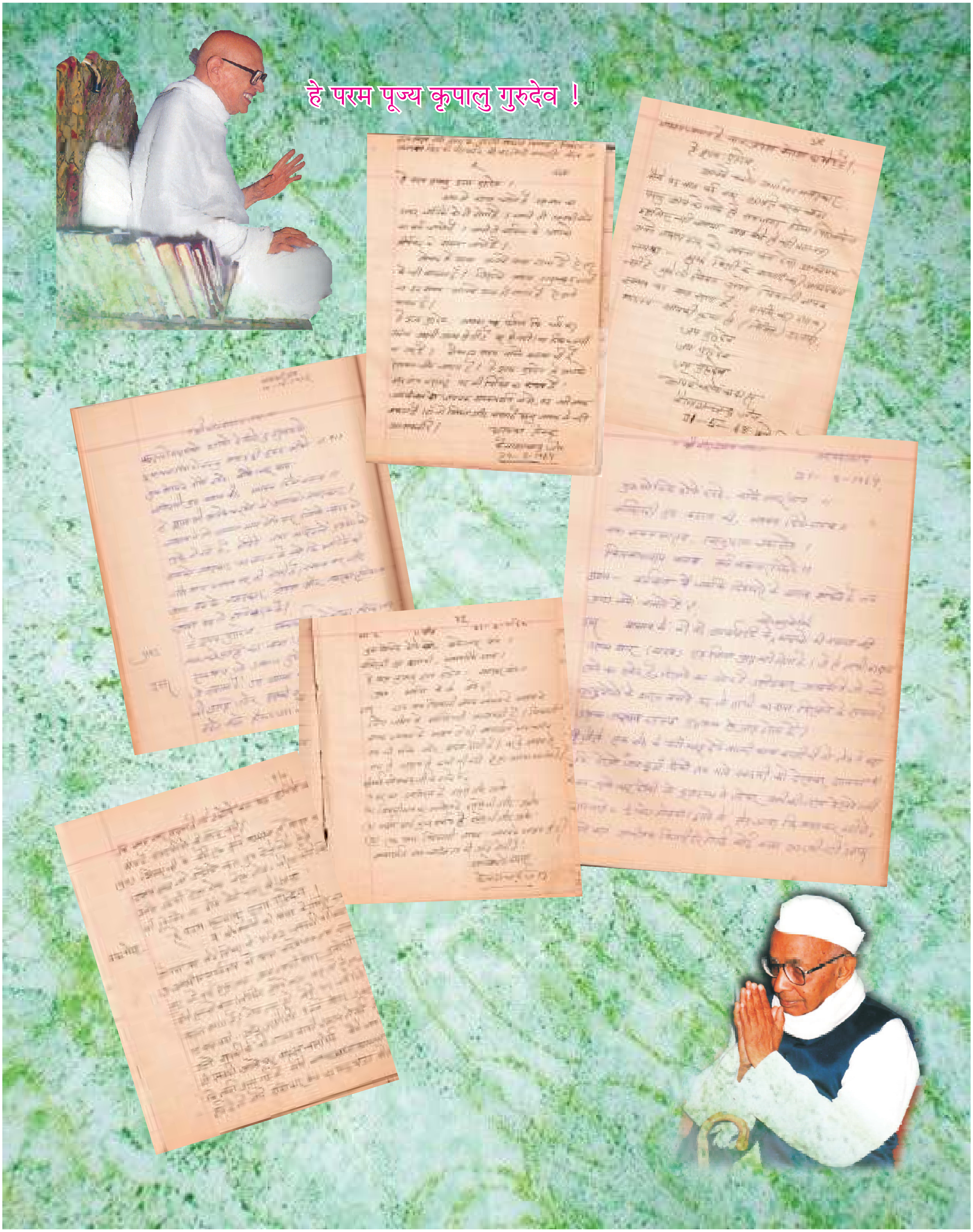

आध्यात्मयुगसृष्टा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

(संक्षिप्त जीवनवृत्त)

भारतदेश के सौराष्ट्र प्रान्त में, बलभीपुर के समीप समागत 'उमराला' गाँव में स्थानकवासी सम्प्रदाय के दशाश्रीमाली वणिक परिवार के श्रेष्ठीवर्य श्री मोतीचन्दभाई के घर, माता उजम्बा की कूख से विक्रम संवत् 1946के वैशाख शुक्ल दूज, रविवार (दिनाङ्क 21 अप्रैल 1890 – ईस्वी) प्रात:काल इन बाल महात्मा का जन्म हुआ।

जिस समय यह बाल महात्मा इस वसुधा पर पधारे, उस समय जैन समाज का जीवन अन्ध–विश्वास, रूढ़ि, अन्धश्रद्धा, पाखण्ड, और शुष्क क्रियाकाण्ड में फँस रहा था। जहाँ कहीं भी आध्यात्मिक चिन्तन चलता था, उस चिन्तन में अध्यात्म होता ही नहीं था। ऐसे इस अन्धकारमय कलिकाल में तेजस्वी कहानसूर्य का उदय हुआ।

पिताश्री ने सात वर्ष की लघुवय में लौकिक शिक्षा हेतु विद्यालय में प्रवेश दिलाया। प्रत्येक वस्तु के ह्वार्द तक पहुँचने की तेजस्वी बुद्धि, प्रतिभा, मधुरभाषी, शान्तस्वभावी, सौम्य गम्भीर मुखमुद्रा, तथा स्वयं कुछ करने के स्वभाववाले होने से बाल 'कानजी' शिक्षकों तथा विद्यार्थियों में लोकप्रिय हो गये। विद्यालय और जैन पाठशाला के अभ्यास में प्राय: प्रथम नम्बर आता था, किन्तु विद्यालय की लौकिक शिक्षा से उन्हें सन्तोष नहीं होता था। अन्दर ही अन्दर ऐसा लगता था कि मैं जिसकी खोज में हूँ, वह यह नहीं है।

तेरह वर्ष की उम्र में छह कक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात्, पिताजी के साथ उनके व्यवसाय के कारण पालेज जाना हुआ, और चार वर्ष बाद पिताजी के स्वर्गवास के कारण, सत्रह वर्ष की उम्र में भागीदार के साथ व्यवसायिक प्रवृत्ति में जुड़ना हुआ।

व्यवसाय की प्रवृत्ति के समय भी आप अप्रमाणिकता से अत्यन्त दूर थे, सत्यनिष्ठा, नैतिज्ञता, निखालिसता और निर्दोषता से सुगन्धित आपका व्यावहारिक जीवन था। साथ ही आन्तरिक व्यापार और झुकाव तो सतत् सत्य की शोध में ही संलग्न था। दुकान पर भी धार्मिक पुस्तकें पढ़ते थे। वैरागी चित्तवाले कहानकुँवर कभी रात्रि को रामलीला या नाटक देखने जाते तो उसमें से वैराग्यरस का घोलन करते थे। जिसके फलस्वरूप पहली बार सत्रह वर्ष की उम्र में पूर्व की आराधना के संस्कार और मङ्गलमय उज्ज्वल भविष्य की अभिव्यक्ति करता हुआ, चार लाईन का काव्य इस प्रकार रच जाता है —

मङ्गल समर्पण

शिवरमणी रमनार तूं, तूं ही देवनो देव।

सत्य की शोध के लिए, दीक्षा लेने के भाव से 22 वर्ष की युवा अवस्था में दुकान का परित्याग करके, गुरु के समक्ष आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार कर लिया और 24 वर्ष की उम्र में (माघ शुक्ल 9, संवत् 1970 – 07 दिसम्बर 1913) के दिन छोटे से उमराला गाँव में 2000 साधर्मियों के विशाल जनसमुदाय की उपस्थिति में स्थानकवासी सम्प्रदाय की दीक्षा अंगीकार कर ली। दीक्षा के समय हाथी पर चढ़ते हुए धोती फट जाने से तीक्ष्ण बुद्धि के धारक गुरुवर को शंका हो गयी कि कुछ गलत हो रहा है परन्तु सत्य क्या है ? यह तो मुझे ही शोधना पड़ेगा।

दीक्षा के बाद तुरन्त ही महात्मा कानजीस्वामी ने स्थानकवासी और श्वेताम्बर सम्प्रदाय के समस्त आगमों का गहन अभ्यास मात्र चार वर्ष में पूर्ण कर लिया। सम्प्रदाय में बड़ी चर्चा चलती थी, कि कर्म है तो विकार होता है न ? यद्यपि गुरुदेवश्री को अभी दिगम्बर शास्त्र प्राप्त नहीं हुए थे, तथापि पूर्व संस्कार के बल से वे दृढ़तापूर्वक सिंह गर्जना करते हैं — **जीव स्वयं से स्वतन्त्ररूप से विकार करता है; कर्म से नहीं अथवा पर से नहीं। जीव अपने उल्टे पुरुषार्थ से विकार करता है और सुल्टे पुरुषार्थ से उसका नाश करता है।**

विक्रम संवत् 1978में महावीर प्रभु के शासन-उद्धार का और हजारों मुमुक्षुओं के महान पुण्योदय का सूचक एक मङ्गलकारी पवित्र प्रसंग बना —

32 वर्ष की उम्र में, विधि के किसी धन्य क्षण में श्रीमद्भगवत् कुन्दकन्दाचार्यदेव रचित 'समयसार' नामक महान परमागम, गुरुदेवश्री के हस्तकमल में आया, जिसका अध्ययन और चिन्तन करते हुए अन्तर में आनन्द और उल्लास प्रस्फुटित हुआ। इन महापुरुष के अन्तरंग जीवन में भी परम पवित्र परिवर्तन हुआ। भूली पड़ी परिणति ने निज घर देखा। इन पवित्र पुरुष के अन्तर में से सहज ही उद्गार निकले — **'यह तो अशरीरी होने का शास्त्र है।'** तत्पश्चात् श्री प्रवचनसार, अष्टपाहुड़, मोक्षमार्गप्रकाशक, द्रव्यसंग्रह, सम्यग्ज्ञानदीपिका इत्यादि दिगम्बर शास्त्रों के अभ्यास से आपको नि:शंक निर्णय हो गया कि दिगम्बर जैनधर्म ही मूलमार्ग है और वही सच्चा धर्म है। इस कारण आपकी अन्तरंग श्रद्धा कुछ और बाहर में वेष कुछ — यह स्थिति आपको असह्य हो गयी। सत्यधर्म का स्वरूप प्रकाशित करने में हिचकना पड़ता था; अत: अन्तरंग में अत्यन्त मनोमन्थन के पश्चात् सम्प्रदाय के परित्याग का निर्णय लिया।

सोनगढ़ आकर वहाँ 'स्टार ऑफ इण्डिया' नामक एकान्त मकान में महावीर प्रभु के

जन्मदिवस, चैत्र शुक्ल 13, संवत् 1991 (दिनांक 16अप्रैल 1935) के दिन दोपहर सवा बजे सम्प्रदाय का चिह्न मुँह पट्टी का त्याग कर दिया और स्वयं घोषित किया कि **अब मैं स्थानकवासी साधु नहीं; मैं सनातन दिगम्बर जैनधर्म का श्रावक हूँ।** सिंह-समान वृत्ति के धारक इन महापुरुष ने 45 वर्ष की उम्र में महावीर्य उछाल कर यह अद्भुत पराक्रमी कार्य किया।

स्टार ऑफ इण्डिया में निवास करते हुए मात्र तीन वर्ष के दौरान ही जिज्ञासु भक्तजनों का प्रवाह दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही गया, जिसके कारण यह मकान एकदम छोटा पड़ने लगा; अतः भक्तों ने इन परम प्रतापी सत् पुरुष के निवास और प्रवचन का स्थल '**श्री जैन स्वाध्याय मन्दिर**' का निर्माण कराया। गुरुदेवश्री ने वैशाख कृष्ण 8, संवत् 1994 (दिनांक 22 मई 1938) के दिन इस निवासस्थान में मंगल पदार्पण किया। यह स्वाध्याय मन्दिर, जीवनपर्यन्त इन महापुरुष की आत्मसाधना और वीरशासन की प्रभावना का केन्द्र बन गया।

यहाँ ग्रन्थाधिराज समयसार पर प्रवचन प्रारम्भ करने के पश्चात् दिगम्बर धर्म के चारों अनुयोगों के छोटे बड़े 183 ग्रन्थों का गहनता से अध्ययन किया, उनमें से मुख्य 38ग्रन्थों पर सभा में प्रवचन किये। जिनमें श्री समयसार ग्रन्थ पर 19 बार की गयी अध्यात्म वर्षा विशेष उल्लेखनीय है। प्रवचनसार, अष्टपाहुड़, परमात्मप्रकाश, नियमसार, पंचास्तिकायसंग्रह, समयसार कलश-टीका इत्यादि ग्रन्थों पर भी बहुत बार प्रवचन किये हैं।

दिव्यध्वनि का रहस्य समझानेवाले और कुन्दकुन्दादि आचार्यों के गहन शास्त्रों के रहस्योद्घाटक इन महापुरुष की भवताप विनाशक अमृतवाणी को ईस्वी सन् 1961 से नियमितरूप से टेप में उत्कीर्ण कर लिया गया, जिसके प्रताप से आज अपने पास नौ हजार से अधिक प्रवचन सुरक्षित उपलब्ध हैं। यह मङ्गल गुरुवाणी, देश-विदेश के समस्त मुमुक्षु मण्डलों में तथा लाखों जिज्ञासु मुमुक्षुओं के घर-घर में गुंजायमान हो रही है। इससे इतना तो निश्चित है कि भरतक्षेत्र के भव्यजीवों को पञ्चम काल के अन्त तक यह दिव्यवाणी ही भव के अभाव में प्रबल निमित्त होगी।

इन महापुरुष का धर्म सन्देश, समग्र भारतवर्ष के मुमुक्षुओं को नियमित उपलब्ध होता रहे, तदर्थ सर्व प्रथम विक्रम संवत् 2000 के माघ माह से (दिसम्बर 1943 से) **आत्मधर्म** नामक मासिक आध्यात्मिक पत्रिका का प्रकाशन सोनगढ़ से मुरब्बी श्री रामजीभाई माणिकचन्द दोशी के सम्पादकत्व में प्रारम्भ हुआ, जो वर्तमान में भी गुजराती एवं हिन्दी भाषा

में नियमित प्रकाशित हो रहा है। पूज्य गुरुदेवश्री के दैनिक प्रवचनों को प्रसिद्धि करता दैनिक पत्र **श्री सद्गुरु प्रवचनप्रसाद** ईस्वी सन् 1950 सितम्बर माह से नवम्बर 1956 तक प्रकाशित हुआ। **सुवर्ण-सन्देश** नामक साप्ताहिक पत्रिका अक्टूबर 1960 से अप्रैल 1962 तक प्रकाशित हुई। स्वानुभवविभूषित चैतन्यविहारी इन महापुरुष की मङ्गल-वाणी को पढ़कर और सुनकर हजारों स्थानकवासी श्वेताम्बर तथा अन्य कौम के भव्य जीव भी तत्त्व की समझपूर्वक सच्चे दिगम्बर जैनधर्म के अनुयायी हुए। मूल दिगम्बर जैनों को भी आपने सच्चा दिगम्बर बनाया।

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट, सोनगढ़ द्वारा दिगम्बर आचार्यों और मान्यवर, पण्डितवर्यों के ग्रन्थों तथा पूज्य गुरुदेवश्री के उन ग्रन्थों पर हुए प्रवचन-ग्रन्थों का प्रकाशन कार्य विक्रम संवत् 1999 (ईस्वी सन् 1943 से) शुरु हुआ। ईस्वीं सन् 1980 तक पूज्य कृपालु कहान गुरुदेव की उपस्थिति तक बाईस लाख पुस्तकें प्रकाशित हुईं। श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर की ओर से भी इस समय तक आठ लाख पुस्तकें प्रकाशित हुईं। सत्साहित्य द्वारा इस वीतरागी तत्त्वज्ञान की देश-विदेश में अपूर्व प्रभावना हुई, जो अनवरतरूप से अभी भी चल रही है।

वर्तमान में सत्साहित्य का प्रकाशन सोनगढ़ के उपरान्त भावनगर, राजकोट, मुम्बई, देवलाली, जयपुर, अलीगढ़, सोनागिर, इत्यादि अनेक स्थानों से हो रहा है। अब तो पूज्य गुरुदेवश्री की रिकार्डिंग वाणी के अक्षरशः प्रकाशन भी प्रारम्भ हुए हैं। परमागमों का गहन रहस्य समझाकर कृपालु कहान गुरुदेव ने हम सब पर अमाप करुणा बरसायी है, तत्त्व जिज्ञासु जीवों के लिए यह एक महान आधार है और दिगम्बर जैन साहित्य की एक अमूल्य सम्पत्ति है।

ईस्वीं सन् 1962 के दशलक्षण पर्व से भारत भर में अनेक स्थानों पर पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्रवाहित तत्त्वज्ञान के प्रचार के लिए प्रवचनकार भेजना प्रारम्भ हुआ। इस प्रवृत्ति से भारत भर के समस्त दिगम्बर जैन समाज में अभूतपूर्व आध्यात्मिक जागृति उत्पन्न हुई। आज भी देश-विदेश में दशलक्षण पर्व में सैकड़ों प्रवचनकार विद्वान इस वीतरागी तत्त्वज्ञान का डंका बजा रहे हैं।

बालकों में तत्त्वज्ञान के संस्कारों का अभिसिंचन हो, तदर्थ सोनगढ़ में विक्रम संवत् 1997 (ईस्वीं सन् 1941) के मई महीने के ग्रीष्मकालीन अवकाश में बीस दिवसीय धार्मिक शिक्षण वर्ग प्रारम्भ हुआ, जो अनवरतरूप से चल रहा है। ईस्वीं सन् 1967 से श्री वीतराग-विज्ञान परीक्षा बोर्ड जयपुर द्वारा प्रतिवर्ष सम्पूर्ण भारत में वीतराग-विज्ञान पाठशाला के सैकड़ों

केन्द्रों पर धार्मिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है। जिसमें बालकों के साथ-साथ छोटे-बड़े जिज्ञासु भाई-बहिन हजारों की संख्या में मूल तत्त्वज्ञान सिखते हैं। बालकों के तत्त्वज्ञान का बीजारोपण करने हेतु प्रशिक्षित अध्यापक तैयार करने के लिये, शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर इस श्रृंखला की अविस्मरणीय कड़ी है, जो पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर का विनम्र प्रयास है। वर्तमान में गुरुदेवश्री के प्रभावनायोग से स्थापित अनेक संस्थाओं द्वारा संचालित शिक्षण केन्द्र भी इस परम्परा में अभिवृद्धि कर रहे हैं।

सोनगढ़ में विक्रम संवत् 1997 - फाल्गुन शुक्ल दूज (28 फरवरी 1941) के दिन नूतन दिगम्बर जिनमन्दिर में कहानगुरु के मङ्गल हस्त से श्री सीमन्धर आदि भगवन्तों की पंच कल्याणक विधिपूर्वक प्रतिष्ठा हुई। उस समय सौराष्ट्र में मुश्किल से चार-पाँच दिगम्बर मन्दिर थे और दिगम्बर जैन तो भाग्य से ही दृष्टिगोचर होते थे। जिनमन्दिर निर्माण के बाद दोपहरकालीन प्रवचन के पश्चात् जिनमन्दिर में नित्यप्रति भक्ति का क्रम प्रारम्भ हुआ, जिसमें जिनवर भक्त गुरुराज हमेशा उपस्थित रहते थे, और कभी-कभी अतिभाववाही भक्ति भी कराते थे। इस प्रकार गुरुदेवश्री का जीवन निश्चय-व्यवहार की अपूर्व सन्धियुक्त था।

ईस्वी सन् 1941 से ईस्वीं सन् 1980 तक सौराष्ट्र-गुजरात के उपरान्त समग्र भारतदेश के अनेक शहरों में तथा नैरोबी में कुल 66दिगम्बर जिनमन्दिरों की मङ्गल प्रतिष्ठा इन वीतराग-मार्ग प्रभावक सत्पुरुष के पावन कर-कमलों से हुई और आज भी यह प्रवृत्ति अनवरतरूप से चल रही है।

जन्म-मरण से रहित होने का सन्देश निरन्तर सुनानेवाले इन चैतन्यविहारी पुरुष की मङ्गलकारी जन्म-जयन्ती 59 वें वर्ष से सोनगढ़ में मनाना शुरु हुआ। तत्पश्चात् अनेकों मुमुक्षु मण्डलों द्वारा और अन्तिम 91 वें जन्मोत्सव तक भव्य रीति से मनाये गये। 75 वीं हीरक जयन्ती के अवसर पर समग्र भारत की जैन समाज द्वारा चाँदी जड़ित एक आठ सौ पृष्ठीय अभिनन्दन ग्रन्थ, भारत सरकार के तत्कालीन गृहमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री द्वारा मुम्बई में देशभर के हजारों भक्तों की उपस्थिति में पूज्यश्री को अर्पित किया गया।

श्री सम्मेदशिखरजी की यात्रा के निमित्त समग्र उत्तर और पूर्व भारत में मङ्गल विहार ईस्वी सन् 1957 और ईस्वी सन् 1967 में ऐसे दो बार हुआ। इसी प्रकार समग्र दक्षिण और मध्यभारत में ईस्वी सन् 1956और ईस्वी सन् 1964 में ऐसे दो बार विहार हुआ। इस मङ्गल तीर्थयात्रा के विहार दौरान लाखों जिज्ञासुओं ने इन सिद्धपद के साधक सन्त के दर्शन किये,

तथा भवान्तकारी अमृतमय वाणी सुनकर अनेक भव्य जीवों के जीवन की दिशा आत्मसन्मुख हो गयी। इन सन्त पुरुष को अनेक स्थानों से अस्सी से अधिक अभिनन्दन पत्र अर्पण किये गये।

श्री महावीर प्रभु के निर्वाण के पश्चात् यह अविच्छिन्न पैंतालीस वर्ष का समय (वीर संवत् 2461 से 2507 अर्थात् ईस्वी सन् 1945 से 1980), वीतरागमार्ग की प्रभावना का स्वर्णकाल था। जो कोई मुमुक्षु, अध्यात्म तीर्थधाम स्वर्णपुरी / सोनगढ़ जाते, उन्हें वहाँ तो चतुर्थ काल का ही अनुभव होता था। दिनांक 19 नवम्बर 1980 शुक्रवार (कार्तिक कृष्ण 7, संवत् 2037) के दिन ये प्रबल पुरुषार्थी आत्मज्ञ सन्त पुरुष — देह का, बीमारी का और मुमुक्षु समाज का भी लक्ष्य छोड़कर अपने ज्ञायक भगवान के अन्तरध्यान में एकाग्र हुए, अतीन्द्रिय आनन्दकन्द निज परमात्मतत्त्व में लीन हुए। सायंकाल आकाश का सूर्य अस्त हुआ, तब सर्वज्ञपद के साधक सन्त ने मुक्तिपुरी के पन्थ में यहाँ भरतक्षेत्र से स्वर्गपुरी में प्रयाण किया। वीरशासन को प्राणवन्त करके यहाँ से अध्यात्म युग सृजक बनाकर प्रस्थान किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी इस युग का एक महान और असाधारण व्यक्तित्व थे, उनके बहुमुखी व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने सत्य से अत्यन्त दूर जन्म लेकर स्वयंबुद्ध की तरह स्वयं सत्य का अनुसन्धान किया और अपने प्रचण्ड पुरुषार्थ से जीवन में उसे आत्मसात किया।

इन विदेही दशावन्त महापुरुष का अन्तर जितना उज्ज्वल है, उतना ही बाह्य भी पवित्र है; ऐसा पवित्रता और पुण्य का संयोग इस कलिकाल में भाग्य से ही दृष्टिगोचर होता है। आपश्री की अत्यन्त नियमित दिनचर्या, सात्विक और परिमित आहार, आगम सम्मत संभाषण, करुण और सुकोमल हृदय, आपके विरल व्यक्तित्व के अभिन्न अवयव हैं। शुद्धात्मतत्त्व का निरन्तर चिन्तवन और स्वाध्याय ही आपका जीवन था। जैन श्रावक के पवित्र आचार के प्रति आप सदैव सतर्क और सावधान थे। जगत् की प्रशंसा और निन्दा से अप्रभावित रहकर, मात्र अपनी साधना में ही तत्पर रहे। आप भावलिंगी मुनियों के परम उपासक थे।

आचार्य भगवन्तों ने जो मुक्ति का मार्ग प्रकाशित किया है, उसे इन रत्नत्रय विभूषित सन्त पुरुष ने अपने शुद्धात्मतत्त्व की अनुभूति के आधार से सातिशय ज्ञान और वाणी द्वारा युक्ति और न्याय से सर्व प्रकार से स्पष्ट समझाया है। द्रव्य की स्वतन्त्रता, द्रव्य-गुण-पर्याय, उपादान-निमित्त, निश्चय-व्यवहार, क्रमबद्धपर्याय, कारणशुद्धपर्याय, आत्मा का शुद्धस्वरूप, सम्यग्दर्शन, और उसका विषय, सम्यग्ज्ञान और ज्ञान की स्व-पर प्रकाशकता, तथा

मङ्गल समर्पण

सम्यक्चारित्र का स्वरूप इत्यादि समस्त ही आपश्री के परम प्रताप से इस काल में सत्यरूप से प्रसिद्धि में आये हैं। आज देश-विदेश में लाखों जीव, मोक्षमार्ग को समझने का प्रयत्न कर रहे हैं - यह आपश्री का ही प्रभाव है।

समग्र जीवन के दौरान इन गुणवन्ता ज्ञानी पुरुष ने बहुत ही अल्प लिखा है क्योंकि आपको तो तीर्थङ्कर की वाणी जैसा योग था, आपकी अमृतमय मङ्गलवाणी का प्रभाव ही ऐसा था कि सुननेवाला उसका रसपान करते हुए थकता ही नहीं। दिव्य भावश्रुतज्ञानधारी इस पुराण पुरुष ने स्वयं ही परमागम के यह सारभूत सिद्धान्त लिखाये हैं :—

1. एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का स्पर्श नहीं करता।
2. प्रत्येक द्रव्य की प्रत्येक पर्याय क्रमबद्ध ही होती है।
3. उत्पाद, उत्पाद से है; व्यय या ध्रुव से नहीं।
4. उत्पाद, अपने षट्कारक के परिणमन से होता।
5. पर्याय के और ध्रुव के प्रदेश भिन्न हैं।
6. भावशक्ति के कारण पर्याय होती ही है, करनी नहीं पड़ती।
7. भूतार्थ के आश्रय से सम्यग्दर्शन होता है।
8. चारों अनुयोगों का तात्पर्य वीतरागता है।
9. स्वद्रव्य में भी द्रव्य-गुण-पर्याय का भेद करना, वह अन्यवशपना है।
10. ध्रुव का अवलम्बन है परन्तु वेदन नहीं; और पर्याय का वेदन है, अवलम्बन नहीं।

इन अध्यात्मयुगसृष्टा महापुरुष द्वारा प्रकाशित स्वानुभूति का पावन पथ जगत में सदा जयवन्त वर्तो!

तीर्थङ्कर श्री महावीर भगवान की दिव्यध्वनि का रहस्य समझानेवाले शासन स्तम्भ श्री कहानगुरुदेव त्रिकाल जयवन्त वर्तो!!

सत्पुरुषों का प्रभावना उदय जयवन्त वर्तो!!!

❖❖❖

मङ्गल समर्पण

पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति :—

मोक्षपथ प्रदर्शक

मैं पूज्यश्री को वर्तमान में एकमात्र मोक्षपथ प्रदर्शक के रूप में देखता हूँ, क्योंकि आज दस वर्ष हुए, मैंने सोनगढ़ के श्रीकानजीस्वामी का नाम भी नहीं सुना था। चन्द्रकीर्तियात्रा संघ में गया था। रास्ते में सोनगढ़ पड़ा। मैंने वहाँ पर अपने को धन्य समझा और मेरे हृदय में यह पक्की श्रद्धा हो गयी कि यह एक महान् आत्मा हैं। जब से मैं प्रत्येक साल में एक बार चन्द महीनों के लिये वहाँ रहता हूँ, तब मैंने जाना कि मेरी श्रद्धा यह सच्ची निकली कि यह एक महान युगप्रवर्तक हैं।

वर्तमान में पूज्यश्री प्राणीमात्र को सम्बोधन कर रहे हैं कि हे संसार के प्राणियो! तुम सब सुख चाहते हो और सुख के लिए, जब से तुमने होश सम्भाला है, प्रयत्न कर रहे हो, लेकिन सुख नहीं मिला। इसलिए हे संसार के प्राणियों! सुख किसी परवस्तु में नहीं है; सुख अपने अन्दर ही है। यदि अपने अन्दर सुख ढूंढ़ोगे तो प्राप्त होगा, लेकिन अनादि से परिभ्रमण करते हुए जीव ने दया, दान, व्रत, तप, भक्ति, पूजा आदि सर्व शुभकृत्य अपनी सामर्थ्य के अनुसार अनन्त बार किये हैं और पुण्य करके अनन्त बार स्वर्ग में देव हुआ तो भी संसार नहीं टला। इसका एकमात्र कारण यही है कि जीव ने अपने आत्मस्वरूप को नहीं जाना और आत्मस्वरूप को समझे बिना, सुख प्राप्त होता नहीं। इसलिए आत्मकल्याणर्थ सम्यग्दर्शन प्रगट करना सर्व जीवों का कर्तव्य है। सम्यग्दर्शन कोई परवस्तु नहीं है, सम्यग्दर्शन आत्मा के श्रद्धागुण की पर्याय है। यह कहीं पर से प्राप्त नहीं होगी। अनादिकाल से जीव की पर में एकत्वबुद्धि है, उसे हटाकर अपना लक्ष्य अपनी ओर करें तो सम्यग्दर्शन प्रगट हो जाता है। सम्यग्दर्शन यदि इस समय प्राप्त नहीं किया तो अनन्त काल में दुर्लभ हो जावेगा ।

पूज्यश्री का कहना है कि जो तू दु:खी है, वह अपने पागलपन से है, किसी ने तुझे पागल नहीं बनाया है। तेरे अन्दर महान् शक्ति है। तू अनन्त शक्तिवाला होता हुआ, पर में पागल हो रहा है, यह तेरे लिए शोभाजनक नहीं है। हे आत्मा! तूने अनादि से पर की ओर देखा है, पर की ओर देखकर अनन्त काल व्यर्थ व्यतीत किया, अब मनुष्यभव पाने पर भी तू यह रोना रोता है, यह ठीक नहीं। धर्म करने के लिए तुझे पर किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं। तू केवल अपनी ज्ञानगुण की एक समय की पर्याय को, त्रिकाली द्रव्य की ओर सन्मुख कर दे, तेरा भला हो जावेगा। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो जावेगी।

पूज्य गुरुदेव ने इस महान् शक्ति को अपने में अपने द्वारा श्रद्धा-ज्ञान-लीनता की, और प्राणीमात्र को यही सम्बोधन कर रहे हैं कि भाई! अपनी शक्ति को पहिचानो! तुम्हारा कार्य ज्ञाता-दृष्टा है; शरीर के कार्य तुम्हारे नहीं हैं। इस प्रकार 'सद् द्रव्यलक्षणम्' 'उत्पाद्व्ययध्रौव्य युक्तं सत्' जैसे महान अलौकिक मन्त्रों को इतना स्पष्ट किया कि 6 द्रव्यों में उनके गुणों में उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य एक समय में ही होता है; पृथक्-पृथक नहीं। देखो जबकि 6 द्रव्यों में अनादि अनन्त उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य होता है, इस महान् सिद्धान्त को स्वीकार कर लेने पर निमित्त है तो कार्य हुआ, इस बात के लिए अवकाश ही कहाँ है ? उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य 6 द्रव्यों की अनादि-अनन्तता बताता है। अनादि-अनन्त रहते हुए भी उत्पाद-व्यय होता है, वह भी उसी समय सब में हो रहा है, ऐसा जानकर जीव को पर की ओर देखना नहीं रहा।

इसी प्रकार निश्चय के बिना, व्यवहार नहीं होता। जबकि हमारे पास सोना हो, तभी ताम्बे का सोने में उपचार कहला सकता है। वह भी जब कि हम दोनों की पृथकता को मानें, तब निश्चय के साथ ही व्यवहार नाम पाता है। अज्ञानी, बाहरी क्रियाओं को व्यवहार मानता है जो कि ठीक नहीं। आत्मा का व्यवहार, आत्मा से अलग कैसे हो ? अपनी आत्मा को जाना और जाना कि यह राग है, यह अलग है, हेय है। यह आत्मा ही उपादेय है तो राग को हेय जाना, आत्मा को उपादेय माना, तब निश्चय, उपादेय और व्यवहार, हेय कहलाया। निश्चय-व्यवहार द्रव्यसंग्रह में भी एक ही साथ बतलाया है। उपादान निमित्त के सम्बन्ध में वस्तु में अपनी योग्यता से कार्य होता है, उस समय निमित्त की उपस्थिति होती है, लेकिन निमित्त का, कार्य में अकिंचित्करपना है। उपादान और निमित्त दोनों का परिणमन एक दूसरे से स्वतन्त्र हैं। जीव, निमित्ताधीन-पराश्रितबुद्धि से ही संसार मे भटक रहा है। इसलिए पूज्य गुरुदेवश्री जीव की निमित्ताधीन दृष्टि हटाने का और स्वभावसम्मुख होने का, बारम्बार उपदेश दे रहे हैं।

दस वर्ष पहले मैं भी पुण्य को अच्छा, पाप को बुरा मानता था, लेकिन पूज्य गुरुदेव ने बतलाया पाप तो बुरा है ही, पुण्य-पाप दोनों एक ही हैं। आस्रव हैं, अपवित्र हैं, दु:ख देनेवाले हैं; इसलिए पुण्य-पाप रहित अपनी आत्मा को जानो, तभी कल्याण हो सकता है।

जड़ की क्रिया, पुद्गल की ही क्रिया है और विकार की क्रिया, यह भी आत्मस्वभाव से पृथक है; इसलिए अपने स्वभाव में सन्मुख होने से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप जो क्रिया है, वह धर्म की क्रिया है।

कहने का तात्पर्य यह है कि पूज्यश्री ने तमाम विषयों पर इतना स्पष्टीकरण किया है कि

मङ्गल समर्पण

यदि कोई इसे समझपूर्वक, विवेकपूर्वक विचारे और सत्समागम करे, और सम्यग्दर्शन न हो — यह कभी नहीं हो सकता है। सम्यग्दर्शन आसान है; अज्ञानी जीव उसे मुश्किल कहता है।

पूज्य गुरुदेव को मैं इन कारणों से, युक्ति आगम अनुभव से, एक महान् मोक्षपथ प्रदर्शक के रूप में पाता हूँ। उन्हें मैं बारम्बार नमस्कार करता हूँ।

पूज्यश्री को मैंने कई बार स्वप्न में भावलिङ्गी सन्त के रूप में देखा है। वर्तमान में भावलिङ्गी सन्त का दर्शन दुर्लभ हो रहा है लेकिन मैंने सत्गुरुदेव को भावलिङ्गी सन्त के रूप में धर्मोपदेशक जाना है और उनके आहारदान का निमित्त भी मैं ही बना हूँ; इसलिए मैं उनको भावलिङ्गी सन्त के रूप में बारम्बार नमस्कार करता हूँ।

करीब 1 वर्ष हुआ, मैंने स्वप्न में पूज्य गुरुदेवश्री को तीर्थङ्कर के रूप में साक्षात् समवसरण में विराजमान देखा। मैं इन सब बातों से निश्चय करता हूँ कि **पूज्य गुरुदेवश्री आगामी तीर्थङ्कर होनेवाले हैं और वर्तमान में तीर्थङ्कर जैसा ही कार्य कर रहे हैं।** इसलिए अपना हित चाहनेवालों को इस मौके से चूकना नहीं चाहिए। मेरे अपने विचार से इस समय यदि किसी का भला होना है तो उसमें पूज्य गुरुदेवश्री ही निमित्त हो सकते हैं, ऐसा मेरा निश्चय है। **वर्तमान में किसी की हस्ती नहीं जो गुरुदेव की वाणी का विरोध करे, क्योंकि गुरुदेव की वाणी तीर्थङ्करों, कुन्दकुन्दादि आचार्यों की वाणी है। इन्होंने आज तक अपने पास से कुछ नहीं कहा; जो तीर्थङ्करों ने कहा, गणधरों ने कहा, मुनियों ने कहा, वही पूज्य गुरुदेव वर्तमान में सोनगढ़ से संसार के प्राणियों को मोक्षमार्ग के नाविकरूप से सम्बोध रहे हैं। गुरुदेव का विरोध, तीर्थङ्करों का विरोध है।** इसलिए समझदार प्राणी अपना कल्याण जल्दी करें। यह मानुषभव फिर नहीं मिलेगा, ऐसा सुयोग फिर दुर्लभ हो जावेगा।

अन्त में पूज्यश्री के प्रति उनके चरणों में भक्तिभावसहित अगणित नमस्कार करता हूँ और भावना भाता हूँ कि पूज्यश्री के द्वारा संसार का कल्याण होता रहे।

— श्री कैलाशचन्द्र जैन, बुलन्दशहर

सन्मति-सन्देश (श्रीकानजीस्वामी विशेषांक, मई 1962)

नोट – इस लेख में दिये गये समयावधि सम्बन्धी तथ्य सन् 1962 के आधार से समझना चाहिए। — **सम्पादक**

मङ्गल समर्पण : शिष्य का गुरु के प्रति

अहो! अहो!! श्री सद्गुरु.....

अध्यात्म मनीषी पण्डित कैलाशचन्द्र जैन के अन्त:स्तल में पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रति अत्यन्त भक्तिभाव उछलता है; जिसके दर्शन हमें पण्डितजी द्वारा लिखित पत्रों, डायरियों एवं प्रवचनों / कक्षाओं में अभिव्यक्त उनके उद्गारों से होते हैं। यहाँ पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति, पण्डितजी द्वारा प्रवाहित भक्ति सुमन संकलित कर प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

— सम्पादक

पूज्य गुरुदेव, जो नियम से भावी तीर्थङ्कर हैं और वर्तमान में उन्होंने पञ्चम काल को चौथा काल व साक्षात् तीर्थङ्कर के विरह को भुला दिया है, जो अनादि से तीर्थङ्करादि कहते आये हैं, वह ही बात आज सोनगढ़ से भावी तीर्थङ्कर के रूप में कह रहे हैं।

दिनाँक 19-2-1969

वर्तमान में सोनगढ़ के सन्त, सीमन्धर के राजदुलारे वर्तमान में मोक्ष बाँट रहे हैं। जिस जीव को संसार का दु:ख लगा हो और वह वहाँ जावे, वे जैसा कहते हैं, वैसा माने - करे तो वहाँ जाते ही पूज्य कानजीस्वामीजी मोक्ष देते हैं — ऐसा व्यवहार से कहा जाता है, क्योंकि वह कहते है — तू भगवान है! तेरा दूसरी आत्मा से, कर्मादि से तथा शुभाशुभभावों से भी सम्बन्ध नहीं है; बाकी बचा वह तू है। तू उस भगवान आत्मा, जो तू स्वयं ही है, उसकी दृष्टि करे तो मोक्ष तेरे पास है। **दिनाँक 19-2-1969**

उन तीर्थङ्करों की वाणी का रहस्य बतानेवाले वर्तमान में पूज्य कानजीस्वामी जयवन्त वर्तें! **दिनाँक 24-9-1969**

साक्षात् वस्तुस्वरूप को समझानेवाले श्री कानजीस्वामी को बार-बार नमस्कार।

दिनाँक 25-9-1969

कोई भी मुमुक्षु श्रीकानजीस्वामी को निर्ग्रन्थ दिम्बर मुनि नहीं मानता है, निर्ग्रन्थ दिगम्बर ही सद्गुरु होता है, इसमें शक नहीं है परन्तु अपनी-अपनी अपेक्षा जैसे आपको किसी से 100 मिले तो आपको उसके प्रति आदर का भाव आता है परन्तु संसार में तो और भी करोड़पति हैं, उनके प्रति क्यों नहीं? उसी प्रकार जिस जीव को जिससे धर्म की प्राप्ति में निमित्तपना आया है, उसके प्रति सद्गुरु क्या शब्द है, वह उसे भगवान भी कहें तो कोई हर्ज नहीं है। जैसे - गुरु गोविन्द दोनों खड़े, काके लागू पाँय, बलिहारी गुरु कहान की, भगवान दिया बताय॥ **दिनाँक 23-7-1969**

मङ्गल समर्पण

हे पूज्य गुरुदेव!

आप वर्तमान में मेरे लिए तीर्थङ्करों के भी सरताज साबित हुए हैं। आपने, जो अनादि से तीर्थङ्करादि कहते आये हैं, वह बात वर्तमान में पात्र जीवों को बताकर, तीर्थङ्कर भगवान का विरह भुला दिया है। वर्तमान पञ्चम काल को चौथा काल बना दिया है। ऐसे हे कहान स्वामी! मैं किस विधि तुम्हारा गुणगान करूँ।

मैं आपका गुणगान जब कर सकता हूँ, जबकि मैं अभी अपनी आत्मा से परिपूर्ण लीन हो जाऊँ, वह वर्तमान में अपनी मूर्खता के कारण नहीं हो पा रहा है। **दिनाँक 7-4-1969**

जो जीव अपना भला करना चाहता है, उसे पूज्य कानजीस्वामी के चरणों में जाकर उपादान क्या है? निमित्त क्या है? निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध क्या है? हेय-उपादेय-ज्ञेय क्या है? द्रव्य-गुण-पर्याय की स्वतन्त्रता कैसे है? छह द्रव्य, सात तत्त्वों का अभ्यास करना चाहिए। इन सब बातों का सही अध्ययन करानेवाले निमित्तरूप पूज्य गुरुदेव ही हैं, और उनके शिष्य रामजीभाई तथा खेमचन्द्रजी भाई हैं। इनके सानिध्य में अभ्यास करो और फिर अपनी आत्मा का आश्रय लो तो अवश्य कल्याण होगा।

वर्तमान में पूज्य कानजीस्वामी के प्रवचनरूप जो पुस्तकें छपी हैं, वह पात्र जीव के लिए मोक्षमार्ग की कुंजी हैं। **दिनाँक 27-11-1969**

पूज्य गुरुदेव के चरणों में,

अगणित नमस्कार!

हे पूज्य! गुरुदेव अनादि से जो तीर्थङ्कर बताते आये हैं, वहीं आप सोनगढ़ से दिव्यध्वनि के रूप में भव्य जीवों को परोस रहे हैं लेकिन आपकी वाणी को झेलनेवाला सम्यग्दृष्टि ही हो सकता है; मिथ्यादृष्टि तो सुनकर कुछ का कुछ लगायेगा।

वर्तमान में पवित्रता के साथ पुण्य का योग बनने से जो आज भव्य जीवों के हृदय में धर्म की प्राप्ति हुई, वह भव्य जीव चन्द ही हैं। वे आपको भावि तीर्थङ्कर के रूप में नमस्कार करते हैं। पात्रों को ऐसा राग आता है। पात्र जानता है कि ऐसा राग भी दु:खदाई है।

दिनाँक 12-1-1970

हे परम पिता पूज्य गुरुदेव!

आपने वर्तमान में तीर्थङ्करों के विरह को भुला दिया है और पञ्चम काल को चौथा काल बना दिया है — ऐसा पात्र जीव जानते हैं।

हे गुरुदेव! वर्तमान में मुझे आपके अलावा और कोई नहीं दिखता है।

मङ्गल समर्पण

हे प्रभु! आप ना होते तो ऐसा कहा जाता है कि जैनधर्म का लोप हो गया होता। जैसा अनादि से तीर्थङ्करों ने कहा है, कहेंगे, वैसा समस्त ज्ञानी जानते हैं, वैसा ही आपश्री कह रहे हैं।

दिनाँक 7-9-1972

जैनधर्म-जैनकुल और पूज्य श्री कानजीस्वामी का समागम, मोक्ष की प्राप्ति के लिये मिला है – ऐसे समय में जो धर्म प्राप्त न कर सका, वह चारों गतियों में घूमता हुआ निगोद चला जाता है। **दिनाँक** – 15-9-1993

आश्चर्य है, पूज्य श्री कानजीस्वामी का समागम मिलने पर भी ना सुलटा तो जीवन को धिक्कार है। **दिनाँक** – 9-11-1993

तुझे दिगम्बर धर्म मिला है और साथ में पूज्य गुरुदेव, तीर्थङ्कर समान उनका योग बना है – यह एक अचम्भा है, ऐसे समय में —

तू स्थाप निज को मोक्षपथ में, ध्या अनुभव तू उसे।
उसमें ही नित्य विहार कर, न विहार कर परद्रव्य में॥ *(समयसार, 412 गाथा)*

दिनाँक – 11-11-1993

हे जीव! सावधान! ऐसा अवसर फिर नहीं मिलेगा। अब परमपूज्य श्री कानजीस्वामी की कृपा से यह अवसार आया है। सावधान! सावधान!! **दिनाँक** – 1-12-1993

जैनदर्शन में वीतरागता का मन्त्र ही भरे पड़े हैं — इसका ध्यान दिलानेवाले श्री परमपूज्य कानजीस्वामी ही मेरे ध्यान में आते हैं।

पञ्चम काल में पूज्यश्री कानजीस्वामी ने साक्षात् सीमन्धर भगवान को लाकर बैठा दिया है। अरे! जितने वीतरागता के मन्दिर हैं, वे सब 24 घण्टे वीतरागता ही बाँट रहे हैं। लेनेवाला हो तो ले ले — सावधान! **दिनाँक** – 14-12-1993

हे परमपूज्य कानजीस्वामी! आप मेरे लिये तीर्थङ्करों से भी बड़े हो; मैं आपका उपकार भूल नहीं सकता। आपने साक्षात् पञ्चम काल को चौथा काल, भरतक्षेत्र को विदेहक्षेत्र बनाया।

दिनाँक – 1-1-1994, सोनगढ़

वर्तमान में तीर्थङ्करों के समान प्रवचनकार पूज्य गुरुदेव ही थे – उन जैसा (पूज्य गुरुदेव जैसा) साक्षात मोक्ष का वर्णन करनेवाला, तथा सब अनुयोगों को थोड़े में लिखने का कार्य आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी ने किया है। **दिनाँक** – 1-1-1994

हे परम पूज्यश्री कानजीस्वामी! आपके चरणों में अगणित नमस्कार।

दिनाँक – 5-1-1994, अलीगढ़

स्व में बस, पर से खस, आयेगा आत्मा में अतीन्द्रिय रस, यही है अध्यात्म का कस —इतना करो तो बस।

आज 70 वर्षों में पूज्यश्री कानजीस्वामीजी मेरे लिये तीर्थङ्करों के समान हैं — मेरे पास उनके स्वागत के लिये शब्द नहीं हैं।

जिसको पूज्य गुरुदेव का निमित्त मिला और न समझा, तो जीवन व्यर्थ है।

दिनाँक – 10–1–1994, बुलन्दशहर

जैनकुल, दिगम्बर धर्म, पूज्यश्री कानजीस्वामी का समागम मिलते ही — आत्मलाभ होना, यह पञ्चम काल में अद्‌भुत योग है। यदि यह अवसर खो दिया तो पुरानी जगह चला गया – सावधान! सावधान!

पूज्यश्री कानजीस्वामी ने सोनगढ़ तीर्थधाम से 45 वर्षों में एक–एक समय करके मोक्षमार्ग / मोक्ष का सिंहनाद किया है, उसे सुनकर जीव, मोक्षमार्ग को प्राप्त हुए हैं। धन्य–धन्य हैं, जिन्हें गुरुदेव का योग बना।

गुरुदेव का योग किसको कहलाया जावेगा? जिसने प्रगट आत्मस्वभाव का साक्षात् किया है, उसको। यह कार्य आसान है – सहजरूप है।

जैसे, सिंह का नाद सुनकर जंगल के जानवर भयभीत होकर भागने लगते हैं, उसी प्रकार वास्तव में जिसने पूज्य श्री कानजीस्वामी का सिंहनाद सुना है – समझा है, उसके मिथ्यात्व रहता ही नहीं। यदि मिथ्यात्व रहता है, उसने सुना ही नहीं।

मेरे विचार में 45 वर्षों में, अनादि से अनन्त तीर्थङ्करों का सिंहनाद पूज्य गुरुदेव ने बहाया — जिसको वह भाया — उसने पाया — वह अमर बन गया।

दिनाँक – 12–1–1994

प्रश्न — ज्ञायकभाव नौ प्रकार के पक्षों से रहित है, इसका बतलानेवाला साक्षात् आपने देखा है?

उत्तर — हाँ देखा है, परम पूज्यश्री कानजीस्वामी, जिन्होंने 45 वर्षों में भरतक्षेत्र को विदेहक्षेत्र, पञ्चम काल को चौथा कार्य बनाया है, वे मेरे गुरु थे।

उन्होंने जो अनादि से तीर्थङ्करों ने, गणधरों ने ज्ञायकभाव को जाता है, बताया है, वैसा ही बताकर चले गये। ज्ञायकभाव को साक्षात बतलानेवाला समयसार अलौकिक ग्रन्थ है — उसी समयसार का मर्म पूज्य गुरुदेव कहकर चले गये।

धन्य है, जिन्होंने पूज्य गुरुदेव को पहिचाना। **दिनाँक** – 12–1–1994

मङ्गल समर्पण

परम पूज्यश्री कानजीस्वामी का योग एक अचम्भा है, उन्होंने पञ्चम काल में मुक्ति का मार्ग खोल दिया और पञ्चम काल को चौथा काल बनाया।

हे पूज्य गुरुदेव! आप मेरे लिये महान से महान हैं। **दिनाँक** - **18-1-1994**

किसी को ध्यान भी नहीं आता — कोई बतानेवाला भी दिखायी नहीं देता — मात्र भाग्योदय से परम पूज्यश्री कानजीस्वामी का, जैसे ऊपर से भगवान का समोशरण उतरा हो — इस बात को बतानेवाले मिले। देखो! — जिसने उनकी बात हृदय में धारण की -वह पार हो गया।

हे पूज्य गुरुदेव! आप मेरे लिये तीर्थङ्कर के समान हैं, मैं नमस्कार करता हूँ।

दिनाँक - **11-2-1994**

हे परम पूज्य गुरुदेव! तुम साक्षात् मेरे लिये तीर्थङ्कर ही हो — तुम्हें अनन्त बार नमस्कार! **दिनाँक** - **23-2-1994**

वर्तमान में परम पूज्य श्री कानजीस्वामी के समय में ऐसा अवसर आया है — इस अवसर को मत खो देना। **दिनाँक** - **5-3-1994**

अहो! पूज्य गुरुदेव मेरे लिए आप सिद्धसम ही हो - जैसे, भारत में सिद्ध पधारे हों — वैसे ही आप मुझे लगे हो - धन्य-धन्य-धन्य सिद्धसमान गुरु कहान।

बड़े भारी महान कल्याणक में पूज्यश्री से वार्तालाप हुई — वहाँ पर किसी को जाने की इजाजत नहीं, परन्तु मेरी तो अनहोनी बातें हुई — जय गुरुदेव-धन्य-धन्य-कहानगुरु!

भारत में सिद्ध पधारे-अरे! भारत में सिद्ध पधारे, अहो! कहान गुरु पधारे, अरे भारत में सिद्ध पधारे । जय कहान गुरु! जय कहान गुरु!! **दिनाँक** - **15-3-1994**

पूज्य गुरुदेव! आपने अनादि से तीर्थङ्करों का मार्ग बताया; पञ्चम काल को चौथा काल, भरतक्षेत्र को विदेहक्षेत्र बनाया —आप मेरे तारण-तरणहार हो-

जय गुरुदेव - जय विश्व के ज्ञानियों की — मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ।

दिनाँक - **26-3-1994**

धन्य-धन्य सिद्धों की नगरी- धन्य धन्य ज्ञानियों का मिलाप।

मैंने तो पूज्य गुरुदेव को ही देखा है। **दिनाँक** - **26-3-1994**

दिगम्बर धर्म मिलने पर, पूज्य गुरुदेव का समागम होने पर भी शरीरादि से भिन्न अनुभव ना किया तो निगोद में चला जावेगा। **दिनाँक** - **26-3-1994**

परम पूज्यश्री कानजीस्वामीजी को छोड़कर, अधिकांश जीव धर्म की आड़ में नारकी

मङ्गल समर्पण

जैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सावधान! सावधान! सावधान! **दिनाँक** - 28-3-1994

हे परम पूज्य गुरुदेव! अपने अनादि से तीर्थङ्करों के मार्ग को दो शब्दों में परोसा है। धन्य-धन्य गुरु कहान। **दिनाँक** - 29-3-1994

प्रश्न — आश्चर्य है —क्या आश्चर्य है ?

उत्तर — दिगम्बर जैनधर्म मिलने पर, पूज्यश्री कानजीस्वामी का समागम मिलने पर भी, अजीवतत्त्व में ही पागल बना फिरता है। **दिनाँक** - 30-3-1994

पञ्चम काल में पूज्यश्री कानजीस्वामी का योग तीर्थङ्करों के समान था। उनके समय में भी जो नहीं समझा- सब निगोद के पात्र हैं। **दिनाँक** - 22-11-1994

आज 70 वर्षों में पूज्य श्री कानजीस्वामी ना होते तो तू ज्ञायक भगवान है — ऐसा, सुना भी ना होता। वस, तू साक्षात् भगवान है।

निज दर्शन ही श्रेष्ठ है, अन्य न किञ्चित् मान।
हे योगी! शिव हेतु ए - निश्चय से तू जान॥ **दिनाँक** - 14-12-1994

जय समयसार- जय समयसार!

[अनन्त ज्ञानियों का एक मत; एक मिथ्यादृष्टि के करोड़ मत]

(1) जो अनादि से तीर्थङ्करों की दिव्यध्वनि में आया - वर्तमान में वही बात सीमन्धर-भगवान विदेहक्षेत्र में अमृतवर्षा कर रहे हैं- वही बात भविष्य में भावी तीर्थङ्करों की दिव्यध्वनि में आवेगी - उसी बात को परमपूज्य श्री कानजीस्वामी सोनागढ़ से बतलाकर चले गये।

(2) आज विचार आया - पूज्यश्री कानजीस्वामी की आड़ में - तीर्थङ्करों की आड़ में, मुमुक्षु कहलानेवाले गृहीतमिथ्यात्व में इतने लिप्त हैं — उन्हें सत्य बात को कोई कहे तो वह बिलबिला जाते हैं।

(3) वर्तमान में चारों अनुयोगों में जो ज्ञानियों ने कहा है - उस पर चलकर आत्मकल्याण में लग जाना चाहिए।

(4) परम पूज्यश्री कानजीस्वामी के जो प्रवचन है, वह एक अलौकिक निधि है।

(5) ज्यादा चक्कर में ना पड़कर, श्री समयसार-प्रवचनसार, नियमसार-अष्टपाहुड़-पञ्चास्तिकाय-मोक्षमार्गप्रकाशक व परम पूज्यश्री गुरुदेव के प्रवचन में सारा जैनदर्शन का निचोड़ है। **दिनाँक** - 17-12-1994

परम पूज्य गुरुदेव तो चले गये, अब तो सब जगह काम-भोग की ही बात चलती है; आत्मा से सर्वथा सम्बन्ध नहीं है। **दिनाँक** - 24-12-1994

मङ्गल समर्पण

अहो! मेरे लिये तीर्थङ्करों के समान परम पूज्यगुरुश्री कानजीस्वामीजी, आप मेरे भगवान हो — मुझे राग आता है, जो मैंने आप से सीखा है, सबको सिखाऊँ, परन्तु कोई सीखना नहीं चाहता है।

पञ्चम काल में पूज्यश्री कानजीस्वामी का होना अचम्भा है।

अरे! कोई और कहनेवाला भी नहीं दिखता है। बस, हे गुरुदेव! मैं आपके चरणों में अगणित नमस्कार करता हूँ। क्षमा-क्षमा-क्षमा। **दिनाँक** - 24-12-1994

हे परम पूज्य गुरुदेव! तुम्हें अनन्त नमस्कार। तुम मेरे तारणहार हो।

दिनाँक - 26-12-1994

हे पूज्य गुरुदेव! आप तो चले गये, अब कोई कहनेवाला-सुननेवाला नहीं है।

दिनाँक - 7-1-1995

हमारे समय में सत्य वक्ता परमपूज्य कानजीस्वामी ही यथार्थता को बताकर चले गये।

दिनाँक - 17-2-1995

प्रश्न — आत्म-साक्षात्कार को बतानेवाला साक्षात् आपने देखा है?

उत्तर — चारों अनुयोगों में आत्म-साक्षात्कार के अलावा कुछ नहीं है। उसको साक्षात् बतानेवाले मुझे श्री परम पूज्य कानजीस्वामी ही मिले; बाकी होंगे, मुझे केवलज्ञान तो है नहीं। **दिनाँक** - 23-2-1995

वर्तमान में साक्षात् पूज्य गुरुदेव कानजीस्वामी, आत्म-साक्षात्कार के निमित्त थे।

दिनाँक - 23-2-1995

आज विश्व में, मेरे विचार में, पूज्य गुरुदेव ही चारों अनुयोगों का मर्म समझाकर चले गये। बाकी तो सब उल्टी ही बात देखने को मिलती हैं। **दिनाँक** - 24-2-1995

पूज्य गुरुदेव के उपकार के लिये ज्ञानियों के पास शब्द नहीं। **दिनाँक** - 24-2-1995

हे परमपूज्य गुरुदेव! आप धन्य हैं —

आज गुरुदेव के भक्त कहलानेवालों ने तो कमाल ही कर दिया है। थोड़ा-सा मुमुक्षु मण्डल (समाज), उसमें अलग-अलग बँट गये - मात्र अहंबुद्धि के कारण।

A- पूज्य गुरुदेव सत्य बात के बतलाने मिले, यह भी अचम्भा है।

B- उसके सुननेवाले मिले, यह भी अचम्भा है।

C- सुननेवाले भी गलत रास्ते पर चल रहे हैं, यह भी अचम्भा है।

मङ्गल समर्पण

वस्तु विचारत ध्यावतैं, मन पावे विश्राम; रस स्वादत सुख उपजै, अनुभव याकौ नाम।

दिनाँक - 24-2-1995

पञ्चम काल में पूज्य गुरुदेव के अलावा और कोई दिखता ही नहीं था, वे भी चले गये।

बड़े महान पुण्योदय से पूज्यश्री कानजीस्वामी का समागम मिला, फिर न समझा तो — भगवान जाने क्या होगा! हे जीव! तू सावधान हो! सावधान हो! **दिनाँक** - 26-2-1995

वर्तमान में परम पूज्यश्री कानजीस्वामी का समागम मिलने पर भी नहीं समझा तो पुराना घर (निगोद) तैयार है। **दिनाँक** - 28-2-1995

पूज्य गुरुदेव चले गये, उनके साथ उनकी, अर्थात् अनादि से तीर्थङ्करों की बात भी चली गयी। **दिनाँक** - 14-4-1995

हे पूज्य गुरुदेव! आप मेरे लिये तीर्थङ्करों से भी बड़े हो, आपने मेरा जन्म-मरण-मिटा दिया है। **देहरादून, दिनाँक** - 11-3-1996

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी चाहते थे, सब जीव सुखी हों -परन्तु उनकी किसी ने सुनी ही नहीं। मेरी तो सुननेवाला स्वप्न में भी नहीं दिखता। **दिनाँक** - 30-4-1998

जब से मैंने होश सम्भाला है, सब से प्रथम परमपूज्य श्री कानजीस्वामी का समागम मिला, यह पञ्चम काल में धन्य अवसर है। साथ में आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी पञ्चम गुणस्थानी महात्मा थे। उनका मोक्षमार्गप्रकाशक मिला।

साथ में परम पूज्य श्री कानजीस्वामी ने मोक्ष कैसे पहुँचे, यह बताया है। उन बातों को मुझ (कैलाशचन्द्र नामधारी) को भाव आया, वह आठ भागों में भर दिया है।

दिनाँक - 6-1-1999

परमपूज्य गुरुदेव का मिलान हुआ; पूज्य गुरुदेव प्रसन्न हुए और कहा केवलज्ञान की प्राप्ति हो। **दिनाँक** - 29-1-1999

पञ्चम काल में पूज्य श्रीकानजीस्वामी ने अनादि से जो भगवान की दिव्यध्वनि में आया, वह बताया है कि तू त्रिकाल भगवान है; शरीरादि नहीं है। **दिनाँक** - 31-1-1999

पूज्य परम कानजीस्वामी 45 वर्ष तक धर्म की बात बतलाकर चले गये, उनकी बात भी किसी ने मानी नहीं। पञ्चम काल में ज्ञानी का समागम कहीं देखने में नहीं आता है।

दिनाँक - 7-2-1999

पूज्य गुरुदेव कानजीस्वामी ने इतना स्पष्ट कर दिया, तभी नहीं समझा तो समझो, उसकी होनहार खराब है। **दिनाँक** - 8-2-1999

मात्र जब तक गुरुदेव रहे, तब तक सोनगढ़ में देखने का मिला, परन्तु उनके जाते ही सब बातें उनके साथ चली गयी। **दिनाँक** -14-2-1999

पञ्चम काल श्री कानजीस्वामी का योग जिसको मिला, वह धन्य है।

परम पूज्य कानजीस्वामी 45 वर्ष संसार के अभाव की बात थोड़े में बताकर चले गये - जिस बात को विदेहक्षेत्र में सीमन्धरभगवान बतला रहे हैं। **दिनाँक** - 18-2-1999

श्रीसमयसार, श्रीप्रवचनसार, श्रीनियमसार, श्रीमोक्षमार्गप्रकाशक, तथा परमपूज्य श्री कानजीस्वामी के प्रवचन आज विश्व में अलौकिक हैं - जो साक्षात् मोक्ष को बताते हैं।

दिनाँक - 3-3-1999

(1) आज विश्व में सत्य बात का कहनेवाला महात्मा मिलना दुर्लभ है।

(2) इसमें तो मुझे पूज्य श्री कानजीस्वामी ही मेरे उपकारी हैं। जो बात अनादि से तीर्थङ्करों ने बतायी है; उसी बात को महावीर भगवान ने बतायी है; उसी बात को आज विदेहक्षेत्र में पूज्य श्री सीमंधरभगवान बतला रहे हैं - कुन्दकुन्द भगवान, विदेहक्षेत्र गये, आठ दिन रहकर विश्व के प्राणियों को सुखी होने का उपाय बताया - उसी प्रकार 45 वर्ष परमपूज्य कानजीस्वामीजी बताकर चले गये। **दिनाँक** - 4-3-1999

जब परम पूज्य श्री कानजीस्वामी का नैरोबी में समवसरण गया था, तब उनकी दिव्यध्वनि में गाथा 17-18 को ही समझाया गया था।

पूज्य गुरुदेव ने अनेकों बार - सोनगढ़ में दिव्यध्वनि में 19 बार विश्व को माल परोसा है - धन्य, जो उसे सुने-जाने-श्रद्धान करे। **दिनाँक** - 10-3-1999

पूज्य श्रीकानजीस्वामी का उदय मोक्षमार्ग प्राप्त करके मोक्ष में जाने को मिला था - वह आज मुमुक्षु समाज ने खो दिया। **दिनाँक** - 20-3-1999

परम पूज्य श्री कानजीस्वामी ने 45 वर्षों में मिथ्यात्वादि का अभाव होकर, सम्यक्त्वादि की प्राप्ति कैसे हो - इसके लिए अपनी देशना दी है। जिसकी होनहार हो, उसे ही यह बात गले उतर जाती है। **दिनाँक** - 23-3-1999

तू अकृत्रिम चैत्यालय है - इस बात को कहनेवाला कहीं दिखता ही नहीं है - मात्र परमपूज्य श्री कानजीस्वामी ही इस बात को बतलानेवाले मिले। समयसारादि में डंके चोट से बताया है। **दिनाँक** - 10-4-1999

(1) जो जीव, शरीर की अपेक्षा जहाँ जन्म हो गया, इसी में रम गया - उसको सच्ची बात बतलानेवाला मिला ही नहीं। आज 86 वर्षों में पूज्य श्री कानजीस्वामी के अलावा मुझे

सत्य जाननेवाला दिखा ही नहीं, परन्तु अपनी खोटी मान्यता को, गुरुदेव का नाम लेकर पोषण करता दिखता है। **दिनाँक** - 14-4-1999

आज सब जगह काम-भोग की ही वार्ता सुनाई देती है। आत्मकल्याण की बात परम पूज्य श्रीकानजीस्वामी ने 45 वर्ष विश्व को बतायी - परन्तु किसी ने ग्रहण नहीं किया - अचम्भा है। **दिनाँक** - 17-4-1999

मोक्षमहल का दरवाजा बतलानेवाले मुझे श्री कानजीस्वामी ही मिले। **दिनाँक** - 18-4-1999

पूज्य गुरुदेव के अलावा मुझे तो कोई दिखता नहीं है। **दिनाँक** - 26-4-1999

पूज्य गुरुदेवश्री चले गये, उनकी बात उनके साथ ही चली गयी। **दिनाँक** - 28-4-1999

परम पूज्य कानजीस्वामी ने इस कलश को अनेक प्रकार से समझाया है, ताकि जीव सुखी हो जावे। **दिनाँक** - 1-5-1999

आज विश्व में जो जीव श्री कानजीस्वामी के निकट आये - उनको छोड़कर अन्य तो सब असंज्ञी समान ही हैं। **दिनाँक** - 3-5-1999

पूज्यश्री कानजीस्वामी विश्व को जगाने के लिये 45 वर्ष डंका बजाते रहे परन्तु किसी की समझ में बैठा ही नहीं — ऐसा मुझे लगता है। **दिनाँक** - 11-5-1999

परम पूज्य श्री कानजीस्वामी ने 45 वर्षों में अमृत संजीवनी पिलाने का प्रयत्न किया - किसी ने पिया नहीं - यह भी अचम्भा है। **दिनाँक** - 17-5-1999

पूज्य गुरुदेव उपाय बताकर चले गये। **दिनाँक** - 19-5-1999

मेरे परम पूज्यश्री कानजीस्वामी, जिन्होंने 45 वर्ष सोनगढ़ से विश्व के प्राणियों का दिव्यध्वनि को सन्देश दिया —मैं उन सबका गुणगान कैसे करूँ! **दिनाँक** - 23-5-1999

जिसने आज पूज्य गुरुदेव का समागम पाकर सत्य का श्रवण किया, उसने तो अनादि अनन्त तीर्थङ्करों की दिव्यध्वनि को सुना है। **दिनाँक** - 18-2-1994

वर्तमान में मनुष्यभव, जैनकुल, दिगम्बरधर्म, सच्चे-देव-गुरु शास्त्र का समागम और पूज्य गुरुदेव का सुयोग होने पर भी, अपने को नहीं समझा तो पुन: यह अवसर मिलना कठिन ही नहीं, असम्भव है। **दिनाँक** - 17-6-1994

तीर्थङ्कर के समान पूज्य गुरुदेव का वर्तमान में समागम मिला है, महानभाग्योदय से यह

अमूल्य अवसर पाया है। अत: यह निर्णय करना है कि मैं ज्ञायक भगवान हूँ, शरीर नहीं हूँ।

दिनाँक – 24-6-1994

यह मनुष्यभव मिला है; मैं अलग, शरीर अलग, ऐसे निर्णय के लिये। बस इतनी सी बात है, बिना बात के पागल है। दिगम्बरधर्म, जैनकुल! पूज्य गुरुदेव न होते तो यह बात सुनने को भी नहीं मिलती।

दिनाँक – 9-8-1994

दिगम्बरधर्म, जैनकुल, पूज्य गुरुदेव का समागम मिलने पर भी सत्य का विरोध करता है, अपात्र है।

दिनाँक – 13-8-1994

अरे कहान गुरु पधारे!
क्या लाये – मोक्ष का फरमान
मोक्ष का फरमान क्या?
तू साक्षात भगवान है।
शरीर नहीं है?
शरीर नहीं है; अशरीरी सिद्ध है।
जो समझे – वह पार हो जाता है।
अरे सिद्धालय से आया मेरा साक्षात भगवान।
करे लो दर्शन – करलो दर्शन, फिर मौका नहीं आवेगा।
कर लो मेरे सिद्ध के दर्शन, सिद्ध आया – कहाँ आया देखो! देखो!!
रे मेरा सिद्ध आया – मेरा सिद्ध आया।
धन्य धन्य गुरु कहान।
धन्य धन्य गुरु कहान।
पधारो-पधारो-पधारो।

धन्य-धन्य है ज्ञानीजन.....

अध्यात्म मनीषी पण्डित कैलाशचन्द्र जैन की अन्तर परिणति में विश्व के समस्त ज्ञानी-धर्मात्माओं के प्रति अहो भाव वर्तता है, जिसकी झलक हमें उनके पत्रों, डायरियों एवं प्रवचन/कक्षाओं में अभिव्यक्त उद्गारों में मिलती है।

यहाँ पण्डितजी द्वारा परम पूज्य कुन्दकुन्दादि आचार्यों; पूज्य पण्डित टोडरमलजी एवं पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन के प्रति अभिव्यक्त उद्गार प्रस्तुत किये जा रहे हैं। — **सम्पादक**

✯ वर्तमान समय में, (1) जिसको समयसार, कुन्दकुन्द भगवान का तथा अमृतचन्द्राचार्य की आत्मख्याति टीका, (2) मोक्षमार्गप्रकाशक; (3) जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला, जो स्व-पर के लिये अलौकिक चमत्कार है — इतना योग बनने पर भी, अर्थात् मेरे विचार में कुन्दकुन्द भगवान, अमृतचन्द्राचार्य, पण्डित टोडरमलजी व पूज्यश्री कानजीस्वामीजी का योग बनने पर, जीव निश्चयाभासी, उभयाभासी-व्यवहाराभाषी बन जावे तो धिक्कार है।

✯ अहो! अहो! धन्य-धन्य कुन्दकुन्द भगवान!! धन्य-धन्य अमृतचन्द्राचार्य! धन्य - धन्य आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी!!

✯ जिनवाणी का सिंहनाद, ओंकारध्वनि का सार, सीमन्धरभगवान का सिंहनाद, अमृतचन्द्राचार्य का सिंहनाद, टोडरमल जी का सिंहनाद, परम पूज्यश्री कानजीस्वामी का सिंहनाद, जड़मूल से मिथ्यात्व भगाने को अमूल्य रत्न —प्रवचनसार, गाथा 89-90

✯ प्रवचनसार में पारमेश्वरी व्यवस्था है, उसका विश्वास कर। अरे भाई! दिगम्बरधर्म मिलने पर, ज्ञानियों का समागम मिलने पर भी दु:खी है तो वह कभी भी नहीं सुधर सकेगा।

✯ जो अनादि से तीर्थङ्करों की दिव्यध्वनि में आया - उसी को महावीर भगवान के शासन में बताकर श्री कुन्दकुन्द भगवान, अमृतचन्दाचार्य, पद्मप्रभमलधारिदेव, आचार्यकल्प टोडरमलजी तो हमारे समय में नहीं रहे;

✯ श्री समयसारजी में एक-एक शब्द में वीतरागता ही भरी है।
कुन्दकुन्दभगवान ने विदेहक्षेत्र से आकर इसकी रचना की है।
जिसके हाथ में समयसार आया, समझो विश्व की लौकिक सम्पाद कुछ नहीं।

अपनी सम्पदा ऐसी है, एक बार ज्ञान-श्रद्धान हो जावे तो वह 'स हि मुक्त एव' बन जाता है।

★ श्रीसमयसार, श्रीप्रवचनसार, श्रीनियमसार, श्रीपञ्चास्किाय, श्रीअष्टपाहुड, श्रीमोक्षमार्गप्रकाशक, ये सब विश्व की विभूति हैं।

★ दिगम्बर शास्त्र - श्रीसमयसार, श्रीप्रवचनसार, श्रीनियमसार, श्रीपञ्चास्तिकाय, श्रीमोक्षपाहुड़, श्रीमोक्षमार्गप्रकाशक आदि साक्षात् दिव्यध्वनी से आये शास्त्र हैं - प्रत्येक आत्मार्थी को प्रेम से, इनका आत्मकल्याण के लिए अभ्यास करना चाहिए।

★ श्रीसमयसार की कर्ता-कर्म अधिकार की शुरु की दो गाथा - यदि ध्यान में आ जावें, बेड़ा पार हो जावे।

★ श्रीसमयसार के एक-एक शब्द में वीतरागता ही भरी है। वास्तव में श्रीसमयसार, श्रीप्रवचनसार, श्रीनियमसार, श्रीपञ्चास्तिकाय, श्रीअष्टपाहुड़ तथा श्रीमोक्षमार्गप्रकाशक में बच्चे की तरह समझाया है। जिसकी होनहार हो, उसे बात ध्यान में आ जावेगी।

★ आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी का कहना है — जैसा वस्तुस्वरूप है, वैसा मानले, उसी समय सम्पूर्ण दु:खों का अभाव हो जावेगा।

★ आचार्यकल्प में पण्डित टोडरमलजी ने थोड़े में भगवान की दिव्यध्वनि का मर्म, श्रीमोक्षमार्ग-प्रकाशक में भर दिया।

★ मोक्षमार्गप्रकाशक, अनादि का मिथ्यात्वादि का अभाव करके, मोक्ष में पहुँचने की सम्पूर्ण क्रिया का भण्डार है। अत: जो अपना भला करना चाहता है, उसे प्रथम मोक्षमार्गप्रकाशक को प्रेम से पढ़ना-विचारता आदि चाहिए — तो कल्याण का अवकाश है।

★ समयसार, नियमसार, प्रवचनसार के मर्मज्ञ श्री टोडरमलजी ने सर्व ग्रन्थों का सार (असली अतीन्द्रिय मक्खन) मोक्षमार्गप्रकाशक में भर दिया हैं।

★ आचार्य कल्प पण्डित टोडरमलजी ने सातवाँ अधिकार — जैन होने पर; जिनाज्ञा मानने पर भी, निरन्तर शास्त्र स्वाध्याय करने पर भी, सच्चे-देव-गुरु-शास्त्र को बाहरीरूप से मानने पर भी — जो अपने को धर्म के ठेकेदार मानते हैं, उन्हें निश्चयाभासी- व्यवहाराभासी-उभयाभासी की मान्यता लेकर, समझाया है; इतना होने पर भी ना समझा तो निगोद तैयार खड़ा है।

मङ्गल समर्पण

पूज्य गुरुदेव व बहिनश्री मोक्ष का निमन्त्रण देकर चले गये। सावधान! सावधान!

दिनाँक 1-1-94, सोनगढ़

पूज्यश्री कानजीस्वामी तथा बहिनश्री चम्पाबहिन-पञ्चम काल में तीर्थङ्कर-गणधर के समान —जैसा अनादि से तीर्थङ्करों-गणधरों ने कहा है — वर्तमान में सीमन्धर भगवान आदि कह रहे हैं, भविष्य में बतलायेंगे, उसी बात को सोनगढ़ के सन्त श्री कानजीस्वामी और बहिन श्री चम्पाबहिन-तीर्थङ्करों के समान-गणधरों के समान कहकर चले गये।

पञ्चम काल में पूज्य गुरुदेवश्री, बहिनश्री का होना एक अचम्भा है।

—ऐसा होने पर, ऐसा योग बनने पर भी, पूज्य श्री कानजीस्वामी व बहिनश्री चम्पाबहिन का तीर्थङ्कर-गणधर जैसा योग बनने पर भी, मुझे वर्तमान में पात्र जीव दिखायी नहीं देता। अरे! क्या हो गया —यह भी अचम्भा है। **दिनाँक 1-1-94, सोनगढ़**

मैंने आज पूज्य गुरुदेव व बहिनश्री की समाधिनगरी में आकर देखा, उनके बताये हुये बात का लोप सा होता जा रहा है — आज जो बाकी है, वह सोनगढ़ के अलावा कहीं उसका स्वप्न भी नहीं है। सावधान! सावधान! **दिनाँक 1-1-94, सोनगढ़**

.....उसी के अनुसार बहिन श्री के वचनामृत आदि हैं - धन्य हैं! जिन्हें ऐसा योग बनने पर भी खाली रहे जावे, आश्चर्य है! **दिनाँक 1-1-94, सोनगढ़**

आज 70 वर्षों में पूज्य गुरुदेव, बहिनश्री न होते तो जैनधर्म का लोप हो गया होता — अत: अन्तस: मैं पूज्यश्री कानजीस्वामी को तीर्थङ्कर के रूप में, बहिनश्री चम्पाबेन को गणधर के रूप में नमस्कार करता हुआ, अपने को धन्य मान रहा हूँ। **दिनाँक 1-1-94, सोनगढ़**

●●